RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

नारी और धर्म

डॉ० मो० जावेद खान

एम० ए० (राजनितिक विज्ञान) पी० एच० डी०, तिलकामांझी विश्वविद्यालय , भागलपुर

नारी प्रकृति की बेटी है, सृष्टि की परम सौन्दर्यमया सर्वश्रेष्ट कृति है। नारी की आत्मा में प्रेम का प्रसून खिलता है, और सेवा का सौरभ समग्र सृष्टि को सुरक्षित करता है । भारत में सदियों से नारी को सम्मान मिला है और यही कारण है की देवतागण भी भारतभूमि पर आने को लालायित रहते है। भारत में वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति बहुत ही सम्मानजनक एवं आदर्श परक थी। भारत में स्त्री को आदर्श का रूप माना गया है। ज्ञान का आदर्श 'सरस्वती' को माना गया है। धन का आदर्श 'लक्ष्मी' को, शक्ति का आदर्श रूप 'दुर्गा' को, सौन्दर्य का रूप 'रति' को माना गया है।

हिन्दू धर्म में नारी की पूजा दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, पार्वती आदि के रूप में की गयी है। नारी का सम्मान करना सृष्टी की सम्मान करने के समान है और नारी का अपमान करना सम्पूर्ण जगत का अपमान करने के बराबर है। क्यूंकि नारी को ही जगत जननी माजा गया है और स्वीकार किया गया है। भारतीय संस्कृति में नारी को जगत माता के रूप में भी प्रतिष्ठित किया गया है। भारतीय ग्रंथों में नारी के रूप को देवी के रूप में स्वीकारा गया है। नारी करुणा, त्याग, बलिदान, ममता तथा सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति होती है। हिन्दू धर्म में नारी की पूजा कई रूपों में की जाती है। नारी जब अपने बालक या नारी से जुड़े बालक, बालिका या पुरुष को प्रेम करती है तो वात्सल्य प्रेम प्रकट होता है पर जब वाही नारी हुंकार भरती है, तब वह दुर्गा, काली बन जाती है।

मातृ रूप के संदर्भ में कहा गया है "दुर्गा स्प्रस्ती" में के-----

"जगन्मातमात्स्र्तव चरण सेवा न रचित
न वा दतं देवि द्रविनमपि भूयस्तव मया।
तथापित त्वं स्नेह मयि निरुपम चप्रकुरुषे
कुपुत्री जायते कवचिदपि कुमाता न भवति ।।

जहाँ नारी को सम्मान मिलता है वह घर, गावं, राज्य, राष्ट्र खुशहाल रहता है। इसीलिए कहा गया है

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

जहाँ नारी को सम्मान मिलता है वहां देवतागन भी आने को लालाहित रहते है पर धीरे – धीरे नारी की सम्मान में कमी आने लगी और नारी को केवल भोग – विलष और संतानोप्राप्ति का मात्र साधन माना जाने लगा। नारी को चार दीवारों में जकड़ दिया गया और उसकी सीमा दहलीज तक सिमित कर दिगयी । मनुस्मृति भारतीय समाज व्यवस्था का एक मूल ग्रन्थ है और इसमें नारी की स्थिति पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है।

अस्वन्त्रय: स्त्रियः कार्याः पुरुषे: स्वेदवी निशम।
विषयेषु च सज्जन्त्य संस्थाप्या आत्मनोवशे ।।
पिता रक्षति कौमार्य ,भर्त्ता रक्षति यौवने।
रक्षति स्थविरे पुत्र न स्त्री स्वतन्त्रयमहर्ती ।।

पुरुष अपनी स्त्रियों को कभी स्वतंत्र न होने दे तथा विषयों में आसकत हो तो भी अपने वशीभूत रखें! बाल्यावस्था में पिता, युवावस्था में पति, वृद्धवस्था में पुत्र, नारी के रक्षक होते है नारी को स्वतंत्र कभी नहीं रहनी चाहिए। याज्ञवल्क्य स्मृति का विवाह प्रकरण मनुस्मृति की तमाम स्त्री – विरोधी देशनाओं को पीछे छोड़ देता है।

कहा गया है :-

यदि पत्नी दिर्घ रोगग्रस्त हो, कर्तभाषिणी और अपव्यय करने वाली हो, बंध्या हो या अधिक कन्या को जन्म देने वाली हो तो पुरुष को दूसरा विवाह कर लेना चाहिए। रामायणकाल में भी नारियों की अवहेलना की गयी। रामभक्ति में अलौकिक शक्तिमयी सीता को तो आदर से देखा गया परन्तु माता सीता को भी धर्म की शिक्षा दी गयी। इसी कारण संत तुलसीदास कहते है।

"एकई धर्म एक व्रत नेमा।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

कायं वचन मन पति पद प्रेमा ।।

रामायण काल में ही साधारण नारी का समाज में कोई उचित स्थान नहीं था । गोस्वामी तुलसीदास ने नारियों की स्वतंत्रा पर प्रहार किया है और कहा है की ,

"महावृष्टि चलि फूटी किआरी ।

जिमि सुतंत्र भएँ विगरही नारी ।।

तुलसीदास की ये पंक्तियाँ तो नारी विरोध की सीमाओं का अतिक्रमण ही कर देती है ।

ढोल गवाँर सूद पसु नारी ।

सकल ताड़ना के अधिकारी ।।

रीतिकाल की नारी अति वासना का शिकार हो गयी । वह मन बदलाव का उपकरण मात्र बन गयी । राधा के बहाने नारी के अंग प्रत्यंग का जहाँ सूक्ष्म वर्णन हुआ । वहीँ कभी नारी को जुए में हारा गया |

आधुनिक युग में नारी की स्थिति में धीरे - धीरे सुधार परिलक्षित होने लगा है । भारत की स्वतंत्रा के लिए नारियों ने पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया है । सरोजनी नायडू , कस्तूरबा गाँधी , लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनाओं ने अपनी आवाज आजादी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठायी है । अनेक महिलाओं ने राजनितिक क्षेत्र में , प्रतिस्पर्धा क्षेत्र में , औद्योगिक क्षेत्र में एवं शिक्षा कजगत में अपना कदम बढ़ाया है । जिसका उदाहरण हमें अनेक नारियां डॉक्टर , इंजिनियर , प्राध्यापक , उच्च सिविल सेवा , उच्च पुलिस सेवा , न्याय सेवा , भारतीय सुरक्षा सेवा , आदि में अपनी बहुमूल्य भागीदारी सुनिश्चित करते हुए हमारे चारों ओर दिखाई देती है ।

नारियों को चारों ओर हर क्षेत्र में देखते हुए भी अभी भी नारियों को और आगे आने की जरुरत है । उसे स्वयं पवित्रता , साहस , शौर्य , श्रद्धा , प्रेम , समानता आदि गुणों को बड़ाना होगा । नारी के विषय में ऋषि कहते है।

"शुची भ्राजा उषसो नवेदा यशस्व तरि पस्युवो न सत्य"

अतः यह कहा जा सकता है की वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सर्वोत्तम थी और इसीलिए स्वयं ब्राह्मण ने भी स्वीकार किया है की देवी इस ब्रह्माण्ड को धारण करती है पर मध्ययुग में भारतीय नारियों की स्थिति दयनीय हो गयी और वर्त्तमान युग में भी कहीं न कहीं नारी मनोरंजन की प्रसाधन के रूप में समझा गया है इसीलिए आये दिन बलातशर्म की घटना बढती जा रही है ।

अतः हमें नारी को आगे लाना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए

संदर्भ सूचि :-

(1) दुर्गा स्प्रसर्ता देव्यपराध क्षमापन स्त्रोतम – 4 , पृ० - 227
(2) यजुर्वेद 23/27
(3) मनुस्मृति 5 वाँ अध्याय
(4) संत तुलसीदास , रामचरित मानस , अरण्य काण्ड , पृ० – 322
(5) संत तुलसीदास , रामचरित मानस , किष्किन्धा काण्ड , पृ० – 359
(6) संत तुलसीदास ,रामचरित मानस , सुन्दर काण्ड पृ० – 396
(7) महिलाएँ कितनी आज़ाद पृ० – 46

© RRIJM 2015, All Rights Reserved